शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir

जुलाई २०२०, संस्करण ३४

बाबा मुक्तानन्दजी के ११२वें अवतरण दिवस पर सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत ।

प्रिय आत्मन् ! सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्धमार्ग पत्रिका का चौंतीसवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा शान्ति मन्दिर, मगोद में बाबा मुक्तानन्दजी के ११२वें जन्मदिवस पर दिये गये प्रवचन के कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

श्री गुरुदेव

बाबा मुक्तानन्दजी के ११२वें अवतरण दिवस पर सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत । With great respect and love, I would like to welcome everyone from the heart. So, the idea is to share the life, the journey, the sadhana of Baba Muktananda on this 112th solar birthday of the English calendar. I'll speak some in Hindi, some in English. I don't normally do that, because I prefer my thought process in the language continues, but I thought I'd try something new and different today.

So we have gathered here at Shanti Mandir Magod and many different people around the world, I'm sure, beginning in Australia, all over the world, are going to be a part of the celebration today. Because as far as the 16th of May goes, everybody knows that that is the

भगवान् नित्यानन्द जी ने भ्रमण करते-करते कहीं उस 15 वर्ष के छोटे से तरुण बालक को स्पर्श कर दिया और फिर वो स्पर्श, चाहे हम उसे शक्तिपात की प्रथम श्रेणी कहें, पाकर उस बालक ने 25 वर्ष तक 3 बार भारत का भ्रमण किया।

birthday. But Baba was born on the full moon in the month of May, and this is the day he chose, this is the day he has informed us, told us. And so, we in India, and those who understand the full moon, the new moon, the moon cycles, celebrate both. We celebrated it on the 7th of May as the full moon and we celebrate it today as the 16th of May. So those who are born today on the 16th of May are doubly satisfied, or joyous, or feeling good within themselves, that they are born on this day that their Guru, of the lineage that they belong to, the Guru was born on this day.

So in 1908, we are told that in a village in South India, Karnataka, Baba Muktananda was born. At the age of fifteen, touched by Bhagavan Nityananda, he left home to seek, to search. So for twenty-five years, he traveled. And then he met his Guru Bhagavan Nityananda again in Ganeshpuri on the 15th of August, 1947, where he got diksha initiation.

मनुष्य जीवन के बारे में कुछ बातें आपको पता होगीं, शायद आपने पढ़ी होगीं, आपने समझा होगा कि ये सब पूर्व जन्म के कर्म हैं क्योंकि कहा जाता है कि मुक्तानन्द बाबाजी का जन्म 1908 में हुआ था। भगवान् नित्यानन्द जी ने भ्रमण करते-करते कहीं उस 15 वर्ष के छोटे से तरुण बालक को स्पर्श कर दिया और फिर वो स्पर्श, चाहे हम उसे शक्तिपात की प्रथम श्रेणी कहें, पाकर उस बालक ने 25 वर्ष तक 3 बार भारत का भ्रमण किया। उनकी यात्रा का एक ही उद्देश्य था कि गुरु कहाँ हैं, गुरु कैसे मिलेंगे? भारतवर्ष के बहुत सारे सन्तों को वे मिले। अपनी पुस्तक में वे उन सन्तों का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि महाराष्ट्र के दो सन्त हरिगिरि बाबा और जिप्रुअन्ना ने उनसे कहा कि तुम गणेशपुरी जाओ, जिन दोनों के साथ बाबाजी का बहुत स्नेह था, उन्होंने बाबाजी से कहा कि तुम्हारा गुरु गणेशपुरी में है। 15

बाबूराव नामक व्यक्ति बाबाजी के साधनाकाल में उनके साथ रहे और जब भी बाबाजी का मन होता था बाबूरावजी सिद्धगीता, सुन्दरदास के काव्य, ज्ञानवैराग्य छन्दावली इत्यादि गाते थे क्योंकि साधना करते समय व्यक्ति को सत्व की आवश्यकता होती है सौर ये सभी कृतियां सत्व प्रधान हैं।

अगस्त 1947 को वहीं पर बाबाजी को शक्तिपात, तीव्रशक्तिपात, दिव्यशक्तिपात, जैसा भी हम कहें, क्योंकि शैवदर्शन कहता है कि 27 तरह के शक्तिपात होते हैं पर वही गुरु से होते हैं या कैसे होते हैं वो तो अनुभव का विषय है परन्तु उस दिवस बाबाजी जो को जो शक्तिपात प्राप्त हुआ उसने उनका बेड़ा पार कर दिया और भगवान् नित्यानन्दजी ने उन्हें येवला सुकी भेज दिया कि वहाँ जाकर साधना करो। नौ वर्ष तक उन्होंने तीव्र साधना की जैसे प्रात: जल्दी उठना, ध्यान करना और उसी स्थान पर नौ वर्ष तक गुरु आज्ञा का पालन करते हुए निवास किया। कभी-कभी अपने गुरुदेव के दर्शन करने गणेशपुरी आया करते थे परन्तु अधिक समय वहीं पर सत्संग, ध्यान और अध्ययन किया करते थे। जब कभी ग्रामीण लोग बाबाजी से मिलने आते थे और उनकी इच्छा नहीं होती थी तो वे उनको भेज दिया करते थे । बाबूराव नामक व्यक्ति बाबाजी के साधनाकाल में उनके साथ रहे और जब भी बाबाजी का मन होता था बाबूरावजी सिद्धगीता, सुन्दरदास के काव्य, ज्ञानवैराग्य छन्दावली इत्यादि गाते थे क्योंकि साधना करते समय व्यक्ति को सत्व की आवश्यकता होती है और ये सभी कृतियां सत्व प्रधान हैं। आधुनिक युग के मनोरंजन के साधन नहीं परन्तु ऐसा भगवन्नाम जो साधना के समय की शक्ति को शान्त करे और साधक का मन साधना में लगा रहे। चित्शक्तिविलास में हम बहुत सारी बातें पढ़ते हैं जो बाबाजी ने अपनी साधना के विषय में बतायी हैं। मैं मानता हूँ कि हम उनकी साधना से लाभान्वित हुए हैं । आज उनकी समाधि के 38 वर्षों के बाद भी हम देखते हैं कि उनकी साधना का फल हमें किसी न किसी रूप में प्राप्त हो रहा है।

I think I will say this in English, that for whatever Baba Muktananda did in his own personal lifetime, the sadhana, that here we are thirty-eight years later after his leaving the body, continuing our own sadhana, following the path, living the teachings.

I found a quote of Thoreau, which

says, “To be a philosopher is not merely to have subtle thoughts, nor even to found a school, but so to love wisdom as to live according to its dictates, a life of simplicity, independence, magnanimity and trust. It is to solve some of the problems of life, not only theoretically but practically.”

Train yourself so well that even by accident, a mistake does not happen.

And I think this is how I experience Baba Muktananda. This is what he taught us and this is what I share with people. Train yourself so well that even by accident, a mistake does not happen. I don't know if you understand what I want to say here. That we have taught ourselves so well that even when something wrong is going to take place, is going to happen, or we might be in the wrong place at the wrong time, that the body so naturally just goes away from that.

And I shared this by a little example, my experience with Swami Bhramanandaji Maharaj. Whenever anybody came to him and started to bicker, started to complain, started to say all the nasty things of life, he would just so subtly, without them even realizing, change the conversation to an uplifting one. And by the time that person left, he or she had forgotten their problem. They were immersed in that higher thought. And this is what I think Thoreau wants to tell us. Don't just rattle off big statements but live in such a way that your life is simple, your life is independent, your life is magnanimous, and there is trust.

एक अमेरिकन विचारक हैं जिन्होंने भारतीय विचारों को अमेरिका में प्रख्यात किया है कि केवल पढ़ना, केवल पाठ कर लेना, एक विद्यालय या एक गुरुकुल खोल देना ऐसा नहीं है परन्तु उस ज्ञान के

जिस शक्ति का हम पूजन, साधना करते हैं वो तो आनन्द में ही उत्पन्न होती है और उसका हम विभिन्न इन्द्रियों से अनुभव कर सकते हैं।

अनुसार जीना यानि उस ज्ञान को अपने अन्तर में इतना उतार लेना कि जीवन सरल हो जाए, जीवन स्वतन्त्र हो जाए, जीवन विशाल हो जाए अर्थात् अपने पास जो भी व्यक्ति आए उसको भी ये अनुभव हो। जीवन की जो समस्याएं हैं ऐसा नहीं कि वे केवल हमारे ही जीवन में हैं ये सारी समस्याएँ तो हर किसी के जीवन में आती हैं परन्तु अपने जीवन को जीकर, उसका अनुभव लेकर हमें दूसरों को ये बताना चाहिए, न कि केवल उपदेश देकर, कि जीवन की हर समस्या का इस प्रकार समाधान किया जा सकता है। ये जो सभी बड़े लोग हमारे समक्ष जो भी बातें रखते हैं मैं मानता हूँ कि विचारणीय हैं। बाबाजी शैविज्म का एक श्लोक कहा करते थे-

स्वतन्त्र स्वच्छात्म स्फुरती सततं चेतसि शिव:
पराशक्तिश्चेय करणशरणी प्रान्त मुदित:।
तदा भोगैकात्मा स्फुरती च समस्तं जगदिदम्
न जाने कुत्रायं ध्वनिरमुपेतत् संसृतिरीति॥

यानि जो कुछ भी है वह शिव है, स्वतन्त्र है और पवित्र है। बस इस चैतन्य के स्पन्दन सतत हमारे मन में होते रहते हैं। शैविज्म हमें मन के स्पन्दन के बारे में बहुत ध्यान देने को कहता है कि मन क्या है? **'चितिरेवचेतनपदावरूढा चेत्यसङ्कोचिनी चित्तम्'।** यानि चित्त ही चैतन्य है, वही संकुचित होकर मन हो गया है। हम भोग-विलास में चले गए, संसार में चले गए परन्तु शास्त्र कहता है नहीं, पराशक्ति आनन्द रूप में ही उत्पन्न होती है और जिस शक्ति का हम पूजन, साधना करते हैं वो तो आनन्द में ही उत्पन्न होती है और उसका हम विभिन्न इन्द्रियों से अनुभव कर सकते हैं। हमें ये सोचना है, विचार करना है। हम तो सोचते हैं कि ये खान-पान ये सब भोग ही आनन्द है परन्तु महापुरुष कहते हैं कि नहीं इन सभी विषयों में ही नहीं फंसे रहो, इतने इस छोटे से जीवन में मत फंसे रहो ये समझो कि इन्हीं इन्द्रियों के माध्यम से, इसी शरीर के माध्यम से मुझे उस आनन्द का, उस शक्ति का आनन्द लेना है। बाबाजी जब ये सारी बातें बताते थे तब शायद हमें ऐसा लगता है कि जब वे उस शक्ति का अनुभव करते थे तो अपने आसन पर ही उछलते थे क्योंकि ऐसा नहीं कि वे कुछ पढ़ रहे हैं या हमें कोई बात सुना रहे हैं लेकिन उनकी आँखों में एक

झिलमिल, मुख पर एक मुस्कराहट, एक आनन्द का अनुभव वास्तव में प्रतीत होता था । यह विश्व आत्मस्वरूप है यदि ये समझ में आ जाएगा कि ये सब चितिशक्ति का ही स्पन्दन है, ये रस आत्मा का ही स्वरूप है, तो ऐसा ही हमको दर्शन होगा । बाबाजी कहा करते थे कि संसार (संसृति इति संसार:, जो सदैव परिवर्तनशील है) शब्द आया कहाँ से? जब सब चैतन्य की ही लीला है तो ये संसार आया कहाँ से?

यह विश्व आत्मस्वरूप है यदि ये समझ में आ जाएगा कि ये सब चितिशक्ति का ही स्पन्दन है, ये रस आत्मा का ही स्वरूप है, तो ऐसा ही हमको दर्शन होगा ।

बाबाजी एक भजन बहुत गाया करते थे- **जाग रे नर जाग प्यारे अब तो गाफ़िल जाग रे...** हमने भी इस विकट परिस्थिति में बाबाजी का ये प्यारा भजन शान्ति मन्दिर, मगोद में पिछले कुछ महीनों में गाना शुरु कर दिया है क्योंकि बाबाजी इस भजन को गाते हुए हसते थे, उनकी अधिकांश बातों में वे हंसते थे क्योंकि मैं मानता हूँ महापुरुषों को ये समझ आ जाता है कि कहाँ ये मनुष्य इस छोटी सी दुनिया, इस छोटे से मन में फँसा हुआ है, संसार कितना विशाल है? मर गया तो क्या हो गया? पुन: जन्म हो जाएगा क्योंकि **'पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्'** इस जन्म से मुक्त हो जाएंगे फिर जन्म होगा और फिर इस संसार में आ जाएंगे । मैं कई बार लोगों से कहता हूँ कि जब लोग बाबाजी के पास जाकर कहते थे कि बाबाजी शादी हुई है वे कहते थे बहुत अच्छा हुआ, बाबाजी बेटा हुआ है तो वे कहते थे बहुत अच्छा हुआ। यहाँ तक कि कोई कहता था कि बाबाजी पिताजी मर गए तब भी वे कहते थे कि बहुत अच्छी बात है तो उस आदमी को लगता था कि शायद बाबाजी ने सही से सुना नहीं तो वह पुन: कहता था कि बाबाजी पिताजी मर गए तो बाबाजी पुन: कहते थे कि बहुत अच्छी बात है। सन्त की दृष्टि में जन्म, मृत्यु सब समान है । हम जन्म पर तो बहुत खुश होते हैं परन्तु मृत्यु पर दु:ख होता है। जन्म किसका हुआ? जब मृत्यु होगी तभी तो जन्म होगा। अगर हम जीते ही रहेंगे तो जन्म किसका होगा और जन्म लेने के लिए मृत्यु आवश्यक है **'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च'** वैसे ही हम आज बाबा मुक्तानन्दजी का तारीख के अनुसार जन्मदिवस मना रहे हैं तो वे भी पूर्व कभी किसी रूप में रहे होंगे तभी तो उनका जन्म हुआ और इस समय भी वे किसी सिद्धलोक में निवास करते होंगे अथवा भगवान

सुबह उठो, योग करो, प्राणायाम करो, ध्यान करो, पूजा करो, नित्यप्रति श्रीगुरुगीता का पाठ करो, दिनभर कुछ न कुछ शास्त्र का अध्ययन, विचार, चिन्तन इत्यादि करते रहो

नित्यानन्दजी के सानिध्य में निवास कर रहे होंगे। महापुरुषों की लीला वे ही जानें हम तो केवल इतना ही जानते हैं कि उन्होंने हमें जो परम्परागत ज्ञान दिया उसे हमें आगे बढ़ाना है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत से बहुत सारे गुरु, स्वामी रामतीर्थजी, स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी योगानन्दजी एवं अन्य भी सन्त विदेश गए, सब लोग अधिकांश अंग्रेजी बोलते थे और सब ने जाकर हमारी इस परम्परा को, सनातन धर्म को, आगे चलाया परन्तु बाबा मुक्तानन्दजी की ये विशेषता रही कि अंग्रेजी स्थूल रूप से नहीं बोलते थे, थोड़ा बहुत येस्, नो इत्यादि किया करते थे परन्तु धारा प्रवाह से अंग्रेजी नहीं बोलते थे परन्तु कई हजारों को उन्होंने इस मार्ग पर लगा दिया और परम्परागत, बिना किसी आधुनिकता, नूतनता के, जैसा उन्होंने भारत में आश्रमों में रहते-रहते अपने गुरुओं से सीखा होगा वही आश्रम की परम्परा उन्होंने तीस आश्रमों में चला दिया। सुबह उठो, योग करो, प्राणायाम करो, ध्यान करो, पूजा करो, नित्यप्रति श्रीगुरुगीता का पाठ करो, दिनभर कुछ न कुछ शास्त्र का अध्ययन, विचार, चिन्तन इत्यादि करते रहो फिर दोपहर में भगवान् को नैवेद्य चढाओ, ज्योत से ज्योत आरती करो, जैसा गुरुगीता में आता है- **'गुरोरुच्चिष्ठ भोजनम्'** अर्थात् पहले गुरु को समर्पित करो फिर उसी भोजन को ग्रहण करो फिर शाम को अपनी व्यवस्था के अनुसार सत्संग इत्यादि करो। उन्होंने सब को काम पर लगा दिया था कि जो आपको अच्छा लगता है वो करो पर दिनभर करते रहो। बाबाजी के जीवन के अन्तिम दिनों में गणेशपुरी में २४ घण्टे का सप्ताह चल रहा था तो बाबाजी ने बोला कि ध्यान मन्दिर खोल दो तो मैंने कहा कि बाबाजी अगर ध्यान मन्दिर खोल दिया तो सप्ताह में कौन आएगा तो बाबाजी बोले कि तू क्या समझता है कि सब तुकाराम महाराज है कि कीर्तन भी करेंगे और ध्यान भी करेंगे? कीर्तन करने वाले कीर्तन करेंगे और ध्यान करने वाले ध्यान। हमें इतना ज्ञात नहीं था कि ये उनका अन्तिम समय है पर उनको ये था कि जो भी आए उसे शक्तिपात होना चाहिए चाहे कीर्तन के माध्यम से हो या ध्यान के माध्यम से हो। चाहे कितना भी समझदार, बुद्धु हो, चाहे उसे समझ आए या नहीं नहीं आए पर उसे स्पर्श कर देते थे, लात भी मार देते

थे और लोग उस छोटे से ध्यान मन्दिर में जाकर बैठ भी जाया करते थे कि बाबाजी स्पर्श कर दें। कितनों की चितशक्ति जाग्रत हुई कितनों की नहीं ये तो वो जानें और बाबा जानें परन्तु सभी का प्रयास बाबाजी का स्पर्श पाने का ही रहता था। आज भी जब इन बच्चों (छात्रों) को ध्यान करते हुए देखता हूँ तो विचार करता हूँ कि क्या इनको पता भी है कि ये क्या कर रहे हैं? बस इन्हें बता दिया गया है कि इस आसन में बैठो और ध्यान करने का प्रयास करो उसी से कभी न कभी ध्यान अवश्य लगेगा। एक कहावत आती है कि एक महापुरुष के पास एक आदमी जाता है तो वे महापुरुष पूछते हैं कि नाम क्या है, कहाँ से आया है, क्या करता है? बाबाजी भी ऐसा ही बोलते थे। जब उन महापुरुष ने उस व्यक्ति से पूछा कि करता क्या है तो उसने जबाव दिया कि ध्यान सिखाता हूँ तो महापुरुष ने कहा कि अच्छा क्योंकि किसी भी महापुरुष के पास जाकर हम कहें कि मैं ध्यान सिखाता हूँ तो वो बोलेंगे ही कि कैसा, तो वो बोलेगा कि मैं उससे कहता हूँ कि अच्छे से बैठना, प्राणायाम सिखाता हूँ और जो भी उसकी प्रक्रिया थी वो बताता है फिर उसने उन महापुरुष से पूछा कि आप क्या करते हो तो उन्होंने अपने एक शिष्य को बुलाया और एक थप्पड़ लगाकर उसको कहा कि बैठ जा और बोले कि ये ध्यान सिखाता हूँ। कहने का तात्पर्य ये है कि उस महापुरुष की अवस्था क्या है उसकी हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं। एक थप्पड़ लगा दिया और उसकी इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना सब खुल गयीं, उसकी कुण्डलिनी भी जाग्रत हो गयी, उसका जीवन परिवर्तित हो गया। हमने इस बात का सत्य अनुभव बाबा मुक्तानन्दजी के सानिध्य में रहकर किया है क्योंकि जब हम छोटे थे और ध्यान मन्दिर की सफाई करते थे तो सफाई करने के पश्चात् बैठ जाते थे और उन सभी क्रियाओं की नकल किया करते थे, बाबाजी के पास इसकी शिकायत भी पहुंच जाती थी कि ये नकल करते हैं तो बाबाजी कहा करते थे कि कम से कम नकल करते हुए भी एक दिन तो साक्षात् करने लग जाएंगे, यही महापुरुष का उद्देश्य रहता है कि जैसे भी हो सभी को इस मार्ग पर लगा दो। वो कहते थे कि यदि कोई भोजन करके भी यदि ध्यान, जप इत्यादि करता है तो अच्छी बात है क्योंकि किसी

उस महापुरुष की अवस्था क्या है उसकी हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं। एक थप्पड लगा दिया और उसकी इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना सब खुल गयीं, उसकी कुण्डली भी जाग्रत हो गयी, उसका जीवन परिवर्तित हो गया।

भी प्रकार हो सभी का कल्याण होना चाहिए। अन्त में पुन: आप सभी का बड़े प्रेम और सम्मान के साथ हार्दिक स्वागत।

सभी का बड़े प्रेम और सम्मान के साथ हार्दिक स्वागत।

॥ परस्पर देवो भव ॥

॥ सद्गुरुनाथ महाराज की जय ॥